Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

बन्दिश की सरंचना के पारम्परिक तत्व, प्रविधि एवं सिद्धांत

NEHA CHAUHAN[1] & DR. HARWINDER SINGH[2]

1. Research Scholar, Music and Dance Department, Kurukshetra University, Kurukshetra
2. Assistant Professor, Music and Dance Department, Kurukshetra University, Kurukshetra

सार

मूलतः किसी भी भाव की स्पष्ट करने में सरंचना ही काम आती है। जिस प्रकार मूर्तिकला में आकार, रूप-संयोजन जैसे- तत्व सौन्दर्य में वृद्धि करते है; उसी प्रकार भावानुकूल लयबद्ध शब्द रचना, स्वर योजना तथा काव्य 'बन्दिश' के रूप में संगीत के सौंदर्य को अति आकर्षक बनाते है। शब्दों का माध्यम, गायक के लिए अद्भुत सिढ़ी है जो उसे सामान्य श्रोता तक पहुँचा देती है और सामान्य श्रोता जो संगीत के बारे में कुछ नहीं जानता, वह शब्द के माध्यम से उसे महसूस करने लगता है।बन्दिश, भाषा तथा शब्दगत आकृतियों एवं ध्वनियों का समायोजित आँकलन है और साध ही लय-ताल एवं सांगीतिक तत्वों की रूपायन भी है। बन्दिश का अर्थ है- स्वर-लय और ताल युक्त रंजक और सुन्दर शब्द रचना। बन्दिश संगीत की एक प्रकार की आकृति या दर्पण है, जिसमें रागों के स्वरूप, तत्कालीन रीति-रिवाजों की शक्ल और भगवत् स्वरूप की झांकी मिलती है। रागों के सुक्ष्म सौंदर्य और भिन्न-भिन्न रूपों को व्यक्त करने तथा श्रोताओं और रसिको द्वारा ग्राह्य बनाने के लिए संगीत में बन्दिश का विधान बनाया गया। बन्दिश गान निरंतर चलने से एक आकृति की सृष्टि होती है। जिससे राग विशेष का स्वरूप सामने आता है। तंत्री वाद्यों में या अवनद्ध वाद्यों पर बजने वाली सामग्री को भी बन्दिश कहा जाता है। चाहे कंठगत संगीत गायन हो, चाहे तंत्र वाद्यों की रचनाएँ हो और चाहे तबला, पखावज जैसे ताल वाद्यों की रचनाएँ हो। सभी बन्दिशो में आती है। गायन में स्वर, पद, ताल के साथ, तन्त्र वाद्यों में स्वर, लय, ताल के साथ और तालवाद्यों में बोल या पटाक्षर रहते है। तन्त्रवाद्यों और ताल वाद्यों की रचनाएँ 'गत' कहलाती है। निबद्ध व अनिबद्ध गान, दोनों में बन्दिश गायी जाती है। ताल के साथ हो या ताल रहित हो, वह 'बन्दिश' ही होती है। अन्तर केवल इतना ही है कि स्वर और ताल के साथ जब पद या शब्द समूह का समन्वय हो जाता है तो ऐसी बन्दिशे रंजक और सशक्त बन जाती है।[1]

उद्देश्यः- बन्दिश की सरंचना में महत्त्वपूर्ण तथ्यों की प्रमुखता को उजागर करना।

अनुसंधान प्रविधिः- विश्लेषणात्मक प्रविधि।

बीज शब्दः- बन्दिश, सरंचना, प्रविधि, सिद्धांत रचनात्मक तत्त्व, वाग्येकार

भूमिका

संगीत में परम्परागत बन्दिशों का संशोधित रूप

संगीत के इतिहास में बन्दिश के अनेक पर्यायवाची रूप रचना, चीज़, काव्यरचना, पद-रचना, प्रबन्ध, बन्धन, निबद्धगान, अस्थाई, इत्यादि रूप में प्रचलित रही। परम्परागत बन्दिशें व रचनाएं वे कहलाती है। जिनमें परम्परा से चले आ रहे सांगीतिक गुणो के साथ-साथ तत्कालीन रागरागिनियों के स्वरूप, चलन और तान, आलाप आदि के तौर तरीको की झांकी प्राप्त होती है। इसीलिए इन बन्दिशों का महत्व उत्तरी तथा दक्षिणी, दोनों पद्धतियों में प्राचीन काल से चला आ रहा है। परम्परागत बन्दिशें ही वे सीढ़िया है, जिनके द्वारा न केवल रागों के स्वरूप तक पहुँचा जा सकता है बल्कि ये प्राचीन वैदिक काल, मध्यकाल और आधुनिक संगीत को आपस में जोड़ती है।

वैदिक संगीत में ऋक, पाणिका, गाथाएं बन्दिशें थी। जो कुछ परिवर्तन और संशोधन के साथ भरतकाल में ध्रुवागीतो तथा रत्नाकर काल में प्रबन्ध गायन के रूप में प्रचलित हुए। पुनः इन्ही प्रबन्धों से आधुनिक संगीत में प्रचलित ध्रुवपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, टप्पा, गज़ल आदि सामने आई। अपने-अपने समय के अनुसार इन गीत शैलियों या बन्दिशों का

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

स्वरूप शब्द, भाषा, भाव और ताल के अनुरूप भले ही भिन्न रहा है किन्तु यह अवश्य है कि प्राचीन बन्दिशें ही अपने संशोधित रूप निरन्तर प्रचलित होती रही।[2]

बन्दिश के रचनात्मक तत्व

बन्दिश के मूलभूत तत्व (स्वर, लय, ताल, पद, राग व भाषा) उसकी आधारशिला को मजबूत करने में सक्षम है।

(क) राग

शास्त्रीय संगीत की बन्दिश हेतु राग-ज्ञान अनिवार्य है। राग की प्रकृति व नियमों के अनुकूल बन्दिश की रचना कर उसे प्रभावशाली व विभिन्न रसों से ओत-प्रोत किया जाता है। जैसे- राग दरबारी और शंकरा में गंभीर और वीर रस से ओत-प्रोत बन्दिशें ही असल में बन्दिशें लगती है। राग के सप्तक फैलाव से भी बन्दिश प्रभावित होती है उदाहरण: राग पूरिया का फैलाव मंद्र सप्तक में व मारवा को मध्य सप्तक में।[3]

(ख) ताल

ताल की लय और बन्दिश की लय का सामंजस्य नितान्त आवश्यक है। ताल की मात्रा के घटक बन्दिश में छन्दोबद्धता का निर्माण करते है। राग का स्वभाव और स्वरों का चलन इन दोनों के ही अनुरूप ताल योजना होनी चाहिए। कविता के शब्दों के साथ ताल और लय का सांमजस्य बन्दिश की सुन्दरता बढ़ाते है। तालों के वजन एवं शैली के अनुसार ही बन्दिश की रचना होती है। ताल का चयन काव्य की शब्द संख्या और उसके वजन पर ही अवलम्बित होता है।

(ग) पद

बन्दिश को सुन्दर रूप से व्यक्त करने के लिए काव्य के शब्द अत्यन्त सहायक सिद्ध होते है। काव्य में व्याकरण, मर्यादा, अनुशासन, गरिमा व नाद-सौंदर्य के आध्यात्मिक पक्ष मजबूत होने से बन्दिश भी प्रवाहमयी रूप से उभर कर आती है। काव्य पक्ष की छन्दोबद्धता से बन्दिश में लय स्वाभाविक रूप से बनी रहती है। राग का स्वरूप भी काव्यात्मक बन्दिशों के माध्यम से ही सुरक्षित चला आ रहा है।[4]

(घ) भाषा

चाहे बात बन्दिश के क्षेत्रीय विकास की हो या लय-छंद युक्त होने से उसके आकर्षण की, रचनात्मक तत्वों में बन्दिश की ‘‘भाषा’’ विशेष स्थान रखती है। नाद के उच्चारण के लिए तथा उसकी विविध छटाओं की दिखाने के लिए भाषा में सोलह स्वराक्षरों का तथा इन स्वरों से युक्त व्यंजनों का प्रयोग होता है। इन्ही से राग व बन्दिश के शब्दों में चमक व भावनात्मक सौन्दर्य की वृद्धि होती है।[5] प्रान्तीय भाषा व बोली में से केवल कुछ ही ऐसी भाषाएँ है जो राष्ट्रव्यापी स्तर पर सम्पूर्ण भारत का आकर्षण का केन्द्र बन पाई। उदाहरणत: भाषाएँ काव्य के भाव, गूढ़ साहित्यिक रूप तथा मधुरता के गुण को स्वयं में समेटे हुए है। कई बन्दिशें तो भाषा के मिश्रित रूप में भी रची गई है।

बन्दिश के रचनात्मक तत्वों की प्रविधि एवं सिद्धांत

बन्दिश की रचनात्मक प्रविधि

बन्दिश के इस रचना रूप में केवल आकृति ही नहीं अपितु भाव सबलता भी निहित है। बन्दिश की रचना, रचनाकार के हृदय की रागात्मक कृति (भाव सबलता), रचना का अंकुरन और उसकी बनावट की आधारभूमि रचयिता के मनस पर बनने से प्रांरभ होती है। रचनाकार का सृजनशील मनस ही रचना की जटिल प्रक्रिया द्वारा उसे अभिव्यक्ति व रूपाकार देता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

(क) राग का अध्ययन

संगीताचार्य प्रो.आर.डी. वर्मा जी के अनुसार बन्दिश की सृष्टि हेतु राग की ध्यान प्रक्रिया आरम्भ कर उस राग की उपलब्ध बन्दिशों को लगातार सुनने से उसके नियमों, मर्म-स्थलो तथा परिवर्तन का ज्ञान हमारे मनोमस्तिष्क पर छा जाता है।[6] राग की प्रकृति, फैलाव मन्द्र-मध्य-तार और इसमे प्रयुक्त सौन्दर्यवर्धक तत्वों का रचयिता के मस्तिष्क पर अंकित होना अनिवार्य है।

(ख) काव्य का उचित प्रयोग

रचना की प्रविधि में राग-ध्यान के पश्चात उसके भाव को ध्यान में रखकर उचित काव्य का निर्माण करना चाहिए। फिर काव्यों को राग-ताल में समुचित ढंग से मिलाकर यह देखना चाहिए कि अमूक राग में यह काव्य उचित स्थान ग्रहण कर चुका है।

पहले स्वर रचना या पहले काव्य की रचना करना उचित है। इस विषय पर विनय चन्द्र मौदगल्य जी के विचार इस प्रकार है। ''बन्दिश की रचना के समय पहले स्वर या पहले शब्द, इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है कभी आकर्षण स्वर-सन्दर्भ मन में गूंजता है; अनुकूल शब्द योजना बाद में। कभी सुन्दर शब्द रचना के बाद धुन सूझती है। कभी-कभी ऐसा होता है स्थाई एक ही दिन में पूर्ण होने पर अन्तरा महीनों बाद सूझता है, कभी जोड़ी की बन्दिश अर्थात् पुरानी धुन पर नई शब्द रचना भी सफल रहती है। इतना अवश्य है कि अतः करण की प्रेरणा अभाव में जबरदस्ती ठोक-पीटकर बनाई गई कोई भी बन्दिश सफल नहीं हो सकती है।''

सांगीतिक पदों में शब्दों का चयन कुछ इस प्रकार होना चाहिए कि बोल बनाव एवं लय के बोल बाट के प्रदर्शन में अर्थ एवं भाव की सार्थकता बनी रहे।

(ग) भाषा का उचित प्रयोग

बन्दिश की रचना में भाषा की शुद्धता का ध्यान रखना आवश्यक है। रचनाकार इस दृष्टि से भी अपनी भाषा का भी प्रयोग करते है जो भाषा की दृष्टि से सही न होने पर भी स्वर-संयोजन और काव्य के भावों को अधिक आकर्षक बनाते है।

(घ) लय व ताल का स्वरूप

बन्दिश की रचना किस लय व ताल में करनी है। यह बात भी बन्दिश रचना की प्रविधि में अनिवार्य है। क्योंकि प्रत्येक लय में रचना के बोल की भिन्न तकनीक होगी। बन्दिश की स्वरावलियों के वजन द्वारा ही यह ज्ञात होता है कि बन्दिश अमूक ताल में बजेगी।

(ड़) रचनाकार की धर्मिता

बन्दिशा रचना में रचनाकार का सहयोग बहुत महत्वपूर्ण होता है। बन्दिश की रचना प्रक्रिया में मूलभूत भाव रचयिता के मनः स्थिति, उसके संस्कार, व्यक्तित्व, कल्पना, सौन्दर्य चेतना, निम्न, अभ्यास एवं शैलियों का संचित अनुभव इत्यादि भी समाहित रहते है और बन्दिश रचना में इन सभी तथ्यो का अपना-अपना एक सांश्लिष्ट अंशदान रहता है।[7]

बन्दिश के मूल सिद्धांत

संगीत के क्षेत्र में रचना बनाने के नियमों को लेखनी द्वारा वर्णित करना व समझना अत्यंत कठिन है क्योंकि यह एक प्रदर्शन की कला है। पुरानी रचनाओं को भिन्न-भिन्न समायोजनों में कंठस्थ कर तथा उनका अभ्यास करके बन्दिश के गूढ़ रहस्य को समझने से ही सिद्धांतो का ज्ञान होता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

(क) काव्य के शब्दों का नियम

बन्दिश की सरंचना में राग तथा काव्य में भावात्मक एकरूपता होनी आवश्यक है। बन्दिश में काव्य के शब्द राग के रस, ऋतु, प्रकृति तथा समयानुकुल होने चाहिए।[8] उदाहरणतः 'भोर भई उठ जागो', 'चिड़िया करत गान' आदि शब्द सन्धिप्रकाश राग के भाव को व्यक्त कर रहे है। बन्दिश का काव्य छन्दोबद्ध होने के साथ-साथ सीमित व संतुलित भी होना चाहिए।[9]

(ख) राग स्वरूप मुखरित हो

बन्दिश राग का दर्पण या आकृति मानी जाती है किसी राग में रचना करने से पूर्व राग का चलन, उसके प्रधान स्वर, वर्जित स्वर एवं राग वाचक स्वर संगतियों का समुचित ज्ञान होना आवश्यक है। जिससे राग विशेष रूप पूर्ण रूप से मुखरित हो सके और बोल बनाव करना भी सम्भव हो सके।

(ग) सम व खाली से सम्बन्धित सिद्धान्त

बन्दिश अपने सम और खाली के स्थान को बखूबी प्रलक्षित करने वाली होनी चाहिए। रचना करते समय बन्दिश की उठान तथा सम के स्थान के लिए राग का प्रमुख स्वर होना अनिवार्य है।

(घ) गति और स्वरूप के अनुसार तालों का संयोजन

बन्दिश की अपने आप में एक ताल, लय होती है। जिसकी प्रस्तुति के लिए एक मजबूत आधार होना आवश्यक है। राग के अनुसार बन्दिश में ताल का प्रयोग किया जाना चाहिए- तोड़ी, दरबारी कान्हड़ा, मियांमल्हार जैसे रागों के लिए धीर-गम्भीर तालों का प्रयोग और लय विलम्बित होनी चाहिए। चंचल प्रकृति के रागों के लिए द्रुत लय वाले और मध्यलय में बजाए जाने वाली तालों की योजना करनी चाहिए। श्रृंगारिक ठुमरी-टप्पा के लिए दीपचन्दी, रूपक, तीनताल जैसी ताल होनी चाहिए।

(ड़) बन्दिश की लम्बाई व प्रकृति से सम्बन्धित सिद्धांत

सांगीतिक रचना की लम्बाई आवश्यकता से अधिक लम्बी या कम ठीक प्रतीत नहीं होती। इसकी भी एक सीमा होनी चाहिए। कुछ बन्दिशें आलाप प्रधान होती है कुछ के तो मुखड़े में ही तान होती है। फलतः बन्दिश की प्रकृति में आदि से अन्त तक एकरूपता होनी चाहिए।

(च) स्वरोच्चारण और शब्दोच्चारण का समन्वय

यदि शब्द अद्भूत रस से परिपूर्ण है तो उसके स्वरों का लगाव भी आश्चर्य की भावना को प्रकट करता हो। किसी भी रचना के भाव को पूरा करने हेतु राग में लगने वाले स्वरों और वाक्यों की कल्पना पहले ही करनी चाहिए। बन्दिश में तान, मुर्कीयों तथा गमक का प्रयोग शब्दों व स्वरों के सामंजस्य को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

(छ) ताल रहित बन्दिश

यह विषय से थोड़ा-सा अलग है। लेकिन इसे समझना जरूरी है। कुछ ताल रहित-बन्दिशें ऐसी भी है जो मात्र स्वर, पद, लय के आधार पर ही श्रोताओं की भावनाओं पर अमिट छाप छोड़ती है। ऐसी बन्दिशें राग के शास्त्रीय और आध्यात्मिक स्वरूप को प्रकट करती है। जैसे- संस्कृति भाषा के श्लोक और विशिष्ट मन्त्रों द्वारा बनाई गई बन्दिशें 'गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा' या 'ओऽम नारायण हरि' आदि। अच्छे गायक इस प्रकार की बन्दिशें मूल गायन से पूर्व गाते है। अतः इस प्रकार की ताल रहित शब्द रचना भी बन्दिशों की ही श्रेणी में आती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त बन्दिश की रचना से जुड़े बहुमूल्य तथ्यों का अध्ययन करने के पश्चात शोधार्थी यह मानती है कि प्रत्येक काल में बन्दिश की रचना भिन्न-भिन्न श्रेणी के वाग्येकारो द्वारा होती है। परिणामस्वरूप, वाग्येकारों की प्रतिभाशाली प्रवति, उनकी गायकी व साहित्य की समझ तथा उनका भाव पक्ष इत्यादि ऐसी कई चीजे है जो कि बन्दिश को अलग बनाती है। परन्तु अब कुछ ऐसी भी बन्दिशे संगीत के क्षेत्र में पल्लवित हुई है जिससे की बन्दिश का साहित्यिक रूप या फिर गेयरूप ही प्रबल दिखाई पड़ता है। इस प्रकार की बन्दिशे हमारी आग्रमी पीढ़ी को सीखने की अपेक्षा भांम्रित करती अधिक दिखाई देती है। अतः आज के नवीन वाग्येकारो को स्वर व शब्द सामंजस्यंता को स्थिर रखते हुए व राग के सम्पूर्ण भाव को ध्यान में रखते हुए और बन्दिश की प्रविधि के मुख्य सिद्धांतो का पालन करते हुए बन्दिश की रचना करनी चाहिए और बन्दिश की रचना से पूर्व ही सुप्रसिद्ध कलाकारो की बन्दिशो का श्रवण करना व उनके प्रत्येक पहलुओ की जाँचना एक अच्छा विकल्प है। इससे नये वाग्येकार के मस्तिष्क पर बन्दिश निर्माण की अनेक शाखाएं अंकित होगी। अतः बन्दिश की पृष्ठभूमि तैयार करते समय इन सब सिद्धांतों का पालन कर तथा बन्दिश बनाने के निरंतर अभ्यास से रचनाकार की रचना में परिपक्वता आती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ स

1. नानल, माधवी (2014) संगीत कला विहार (पत्रिका), बन्दिश के मूलभूत सिद्धान्त संगीत में पारम्पारिक बन्दिश, पृ.-64
2. ग्रोवर, डा. प्रेम सागर (2016) संगीताचार्य पं. गणेश प्रसाद शर्मा 'नादरस' कृत बन्दिश-निधि एवं साधना-सूत्र, ब्रिटपीन लाइन्ज पटियाला, पृ.-71
3. शर्मा, डा. सीमा (2016) सांगीतिक बन्दिश रचना, सिद्धांत एवं स्वरूप, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स 4697/5-21 ए, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.-86
4. श्री खण्डे, डा. श्रीमती कला (2000) बन्दिशावली, आदित्य राज प्रकाशन, इन्द्रोर (म.प्र.), पृ.-11
5. वीर, राम अवतार (1986) भारतीय संगीत, प्रथम भाग, वीर संगीत प्रकाशन ग्ध्194 लारेंस रोड, नई दिल्ली, पृ.-53
6. शर्मा, डा. सीमा (2016) सांगीतिक बन्दिश रचना, सिद्धांत एवं स्वरूप, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स 4697/5-21 ए, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.-97
7. ल्वन ज्नइम अपकमवए चंदकपज टपदंलबींदकतं डंनकहंसलं.स्मबजनतम क्मउवेजतंजपवदए भाग-2
8. पत्रिका-संगीत कला विहार, अगस्त 1982, पृ.-20
9. सक्सेना, डा. मधुबाला (1986) ख्याल शैली का विकास, वी.के. अरोड़ा, विशाल पब्लिकेशन्स, यूनिवर्सिटी कैम्पस, पृ.-219
10. रघुनाथ सेठ, पत्रिका काव्य संगीत अंक, जनवरी 1969, काव्य संगीत कुछ समस्याएं और उनका समाधान